SHIVAJI UNIVERSITY
KOLHAPUR

शिवाजी विश्वविद्यालय
हिंदी विभाग
कोल्हापूर

डॉ. पांडुरंग पाटील
अध्यक्ष, हिंदी विभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय,
कोल्हापुर - 416004

संस्तुति पत्र

मैं संस्तुति करता हूँ कि ''सूर्यबाला के उपन्यासों का अनुशीलन'' इस शोध-प्रबंध को परीक्षा हेतु अग्रेषित किया जाए।

स्थान : कोल्हापुर

तिथि : 10 DEC 1999

(डॉ. पांडुरंग पाटील)
अध्यक्ष
हिंदी विभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय,
कोल्हापुर-४१६००४

SHIVAJI UNIVERSITY
KOLHAPUR

प्रख्यापन

यह लघु शोध-प्रबंध मेरी सर्वथा मौलिक रचना है, जो शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर की एम्. फिल्. (हिंदी) उपाधि के लिए प्रस्तुत की जा रही है। यह रचना इससे पहले इस या अन्य किसी विश्वद्यालय में किसी भी उपाधि के लिए प्रस्तुत नहीं की गई है।

स्थान : कोल्हापुर।

तिथि : 10 DEC 1999

शोध-छात्रा

(विजया वसंत पाटील)

डॉ. कृष्णकांत पाटील
एम्.ए., पीएच्.डी.
हिंदी विभाग प्रमुख,
शिवराज महाविद्यालय,
गडहिंग्लज।

प्रमाणपत्र

मैं यह प्रमाणित करता हूँ कि कु. विजया वसंत पाटील ने शिवाजी विश्वविद्यालय की एम्.फिल्. (हिंदी) उपाधि के लिए प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध ''सूर्यबाला के उपन्यासों का अनुशीलन'' मेरे मार्गदर्शन में पूरा किया है। यह उनकी मौलिक रचना है। जो तथ्य इस लघु शोध-प्रबंध में प्रस्तुत किए गए हैं, मेरी जानकारी के अनुसार सही हैं। प्रस्तुत शोध कार्य के बारे में मैं पूरी तरह संतुष्ट हूँ।

स्थान : कोल्हापुर।

तिथि : 10 DEC 1999

शोध निर्देशक

(डॉ. कृष्णकांत पाटील)

प्राक्कथन

प्राक्कथन

व्यक्ति का विकास समाज की प्रगति के संदर्भ में नापा जाता है। और समाज की प्रगति का लेखा-जोखा साहित्य में प्रतिबिंबित होता है। वर्तमान युग में मनुष्य जीवन का समग्र विवेचन करनेवाली सक्षम एव समर्थ विधा है उपन्यास। हिंदी साहित्य के इतिहास में उपन्यास विधा को महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त हुआ है। मानव जीवन की विषमताओं तथा उसके विभिन्न ज्ञान-विज्ञानों को सफलतापूर्वक अभिव्यक्ति देते हुए, उसकी व्याख्या करना साहित्य के अन्य किसी माध्यम द्वारा संभव नहीं है। हिंदी के प्रारंभिक उपन्यासों में काल्पनिकता अधिक थी। परंतु आधुनिक काल में उपन्यास विधा में वास्तविक तथा यथार्थ चित्रण मिलता है। समाज की अनेक समस्याओं का इसमें यथार्थ रूप में चित्रण किया गया है। डॉ सूर्यबाला एक सामाजिक उपन्यासकार हैं। डॉ सूर्यबाला एक सशक्त कहानीकार भी हैं। डॉ सूर्यबाला ने उपन्यास, कहानी, लेख, व्यंग्य विधाओं में अपनी लेखनी चलाई है। यह लघु-शोध प्रबंध सूर्यबाला के उपन्यासों के अनुशीलन पर आधारित है।

अपने विश्वविद्यालयीन जीवन में मुझे उपन्यास पढने का शौक था। इसी शौक के कारण मैंने सूर्यबाला का 'दीक्षांत' उपन्यास पढ़ा। तब मेरे मन में विचार आया कि सूर्यबाला के उपन्यासों पर शोध कार्य किया जा सकता है। इसी विचार से शिवाजी विश्वविद्यालय के हिंदी विभागाध्यक्ष डॉ पांडुरंग पाटील और मेरे शोध निर्देशक डॉ. कृष्णकांत पाटील से चर्चा करने के बाद उन्होंने मुझे इस कार्य के लिए अनुमति दी।

शोध कार्य शुरू करने से पहले मेरे मन में यह सवाल उठा कि क्या अब तक अन्य किसी ने सूर्यबाला के साहित्य पर शोध कार्य किया है ? इसकी खोज-बीन करने पर मुझे मालूम हुआ कि बनारस विश्वविद्यालय के अंतर्गत नीरा गंगवार जी ने 'सूर्यबाला के साहित्य का अनुशीलन' इस विषय पर शोध कार्य किया है। शिंवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर में श्री सुनिल बेद्रे उनकी कहानियों पर शोध-कार्य किया है। इसलिए मैंने 'सूर्यबाला के उपन्यासों का अनुशीलन' विषय पर अपना लघु-शोध प्रबंध लिखना पसंद किया। तब मेरे सामने निम्नलिखित प्रश्न उठे थे -

1 सूर्यबाला का व्यक्तित्व कैसा है ?

2 सूर्यबाला के व्यक्तित्व का उनके साहित्य पर क्या प्रभाव है ?

3 सूर्यबाला के उपन्यासों की कथावस्तु क्या है ?

4 पात्रों के चरित्र चित्रण में सूर्यबाला कहाँ तक सफल हो चुकी हैं ?

5 सूर्यबाला ने उपन्यासों द्वारा कौनसी सामाजिक समस्याओं को उजागर किया है ? और उन्हें किस तरह अभिव्यंजना दी है ?

6 सूर्यबाला की भाषाशैली कैसी है ?

उपर्युक्त सभी प्रश्नों के उत्तर प्राप्त करने का प्रयास मैंने इस लघु-शोध प्रबंध में किया है और अंत में उपसंहार लिखा है।

सूर्यबाला के अब तक चार उपन्यास प्रकाशित हुए हैं - मेरे 'संधिपत्र', 'सुबह के इंतजार तक', 'दीक्षांत' और 'अग्निपंखी'। मेरे इस लघु-शोध-प्रबंध की सीमा और अध्ययन की सुविधा के लिए मैंने उनमें से दो 'दीक्षांत' और 'अग्निपंखी' इन दो उपन्यासों का चयन किया है। और उनका विस्तृत रूप में अध्ययन किया है। दूसरी बात यह कि 'मेरे संधिपत्र' और 'सुबह के इंतजार तक' दोनों उपन्यास अप्राप्य हैं।

अध्ययन की सुविधा के लिए मैंने अपने लघु-शोध प्रबंध को निम्नलिखित अध्यायों में विभाजित किया है -

1 प्रथम अध्याय - सूर्यबाला: व्यक्तित्व-कृतित्व -

इस अध्याय में सूर्यबाला का जन्म, आरंभिक जीवन, शिक्षा, विवाह तथा संतान, साहित्य निर्माण एवं पुरस्कार आदि का विवेचन किया है। इसके साथ ही मैंने उनके साहित्य का परिचय दिया है। उनके साहित्य का उनके जीवन से किस प्रकार संबंध है इसका भी चित्रण किया है। अध्याय के अंत में निष्कर्ष दिए हैं।

2 द्वितीय अध्याय - 'दीक्षांत' और 'अग्निपंखी' उपन्यासों की कथावस्तु -

इस अध्याय के अंतर्गत सूर्यबाला के उपन्यास 'दीक्षांत और अग्निपंखी' की कथावस्तु का विवेचन किया है और उसकी समीक्षा भी की है। अंत में निष्कर्ष दिए हैं।

3. तृतीय अध्याय - 'दीक्षांत' और 'अग्निपंखी' उपन्यासों में पात्र तथा चरित्र-चित्रण -

इस अध्याय में चरित्र-चित्रण की सैद्धांतिक जानकारी लिखी है। उसके बाद प्रमुख पात्रों का विवेचन, सहायक और गौण पात्रों का परिचय दिया है। बाद में चरित्र-चित्रण की प्रणालियाँ लिखी हैं। अंत में निष्कर्ष दिए हैं।

4 चतुर्थ अध्याय - 'दीक्षांत' और 'अग्निपंखी' उपन्यासों में चित्रित समस्याएँ -

इस उपन्यास में शैक्षिक, पारिवारिक, सामाजिक समस्याओं का चित्रण किया है। अंत में निष्कर्ष दिए हैं।

5. पंचम अध्याय - 'दीक्षांत' और 'अग्निपंखी' उपन्यासों में कथोपकथन और भाषाशैली -

इस अध्याय के अंतर्गत कथोपकथन के गुण, भाषा का महत्व, शब्द के रूप, भाषा के रूप, शैली का महत्व लिखा है। इन सभी का विवेचन किया है। अंत में निष्कर्ष दिए हैं।

उपसंहार -

अंत में उपसंहार के रूप में निष्कर्ष प्रस्तुत किया है जो प्रबंध के सभी अध्यायों का अध्ययन है। अंत में संदर्भ ग्रंथ सूची दी है।

मेरे इस लघु-शोध प्रबंध की मौलिकताएँ निम्नलिखित हैं -

1 प्रबंध की विवेचित सामग्री प्रत्यक्ष अध्ययन पर आधारित है।

2 अध्ययन के आधार पर लेखिका के व्यक्तित्व एवं साहित्य की तुलना कर साहित्य में प्रतिबिंबित व्यक्तित्व को उभारने की कोशिश की है।

3 सूर्यबाला के दोनों उपन्यासों में अंकित पात्रों का चरित्र-चित्रण कर उनके माध्यम से समाज जीवन को खोजने की कोशिश की है।

4 सूर्यबाला के दानों उपन्यासों में अंकित समस्याओं को सामाजिक परिप्रेक्ष्य में परखने का प्रयास किया है।

5. भाषा का सूक्ष्म अध्ययन कर हर शब्द की जाति एवं प्रकार का उल्लेख किया है।

इस तहर सूर्यबाला के दोनों प्रमुख उपन्यासों का सही मूल्यांकन इस लघु शोध प्रबंध में प्रस्तुत है।

ऋणनिर्देश

इस लघु शोध-प्रबंध की पूर्ति में मुझे प्रोत्साहित करनेवाले तथा सहायता करनेवाले हितचिंतकों के प्रति कृतज्ञता प्रकट करना मैं अपना कर्तव्य समझती हूँ।

प्रस्तुत शोध कार्य मैंने श्रद्धेय गुरूवर्य डॉ कृष्णकांत पाटील जी के निर्देशन में पूर्ण किया है। अपनी कार्य-व्यस्तता के बावजूद भी आप ने समय-समय पर बहुमूल्य निर्देशों द्वारा विषय के अध्ययन में मुझे गति और उत्साह दिया है। आपके मार्गदर्शन एवं सहकार्य के बिना यह कार्य असंभव था इसलिए मैं आपकी अत्यंत कृतज्ञ एवं ऋणी हूँ।

हिंदी विभाग के अध्यक्ष आदरणीय गुरूवर्य डॉ पांडुरंग पाटील जी, पूर्व हिंदी विभागाध्यक्ष आदरणीय डॉ वसंत मोरे जी, आदरणीय डॉ अर्जुन चव्हाण जी का सहयोग तथा आशीर्वाद मेरे साथ रहा है।

मेरे आदरणीय पूज्य पिताजी वसंत पाटील और माता लीला पाटील, दादी माँ और मामा जिनके आशीर्वाद से मैंने यह कार्य सफलतापूर्वक पूर्ण किया। इनके प्रति कृतज्ञ रहना मेरे लिए आवश्यक है। बहनें शुभदा, मंजुषा, विद्या, पद्मश्री के सहयोग के लिए भी मैं आभारी हूँ।

न. भु पाटील ज्युनियर कॉलेज के हिंदी अध्यापक श्री डी डी पाटील जी और स्टाफ के सभी अध्यापक अध्यापिकाओं ने मेरी सहायता की इसलिए मैं उनके प्रति कृतज्ञभाव रखती हूँ।

मेरे मित्रपरिवारों में श्री अशोक नांदवडेकर, अशोक बाचुळकर, गिरीश, मिलिंद, अमोल, जैनुद्दिन, विजय, हनुमान, सुनिता आदि ने मेरी सहायता की इसलिए मैं उनके प्रति कृतज्ञभाव रखती हूँ।

न. भु पाटील ज्युनिअर कॉलेज, चंदगड, शिवराज कॉलेज, गडहिंगलज तथा शिवाजी विश्वविद्यालय के ग्रंथालय से मुझे अनेक ग्रंथों का लाभ हुआ। उन सभी के प्रति मैं हार्दिक धन्यवाद अर्पित करती हूँ।

साथ ही मैं इस शोधकार्य का सही रूप में टंकलेखन करनेवाले श्री अल्ताफ मोमीन (विश्वास कॉलनी, सुभाषनगर, कोल्हापुर। दूरभाष - 692477) जी की भी आभारी हूँ।

स्थान कोल्हापुर ।
तिथि 10 दिसंबर, 1999।

शोध छात्रा

(कु विजया पाटील)